हम माननीय थियोफिलुस से क्या सीख सकते हैं?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

हमारे प्रभु यीशु मसीह का नाम धन्य हो। इस बाइबल अध्ययन में आपका स्वागत है। आज हम मिलकर परमेश्वर के वचन का मनन करेंगे—जो हमारे जीवन के मार्ग में एक ज्योति और हमारे पैरों के लिए दीपक है।

आज हम एक व्यक्ति के बारे में जानेंगे, जिसका नाम था थियोफिलुस। बाइबल हमें उसके बारे में बहुत अधिक जानकारी नहीं देती, लेकिन सुसमाचार के प्रचार में उसकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी।

थियोफिलुस की कहानी को समझने से पहले, आइए नए नियम के कुछ पत्रों पर एक दृष्टि डालें।

नए नियम में कई पत्र ऐसे हैं जो किसी विशेष व्यक्ति को संबोधित हैं। ये पत्र मूलतः किसी खास व्यक्ति के लिए लिखे गए थे, पर आज भी हमारे लिए अत्यंत उपयोगी हैं। उदाहरण के लिए, पौलुस ने तिमुथियुस, तीतुस और फिलेमोन को पत्र लिखे। ये पत्र उन्हें विश्वास और सेवा में दृढ़ करने के लिए थे—और परमेश्वर ने ऐसा प्रबंध किया कि ये आज भी हमारे पास उपलब्ध हैं और हम उन्हें पढ़ते हैं।

संभवतः तिमुथियुस, तीतुस और फिलेमोन ने कभी नहीं सोचा होगा कि उनके नाम पर लिखे गए पत्र एक दिन लाखों लोगों द्वारा पढ़े जाएंगे। न ही पौलुस ने कल्पना की होगी कि ये पत्र इतने व्यापक

हम माननीय थियोफिलुस से क्या सीख सकते हैं?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

प्रभाव डालेंगे।

यह वैसा ही है जैसे आप आज किसी दूर के रिश्तेदार को पत्र लिखें, और कई साल बाद वही पत्र पूरी दुनिया में पढ़ा जाए। हैरानी की बात होगी, है न? यही कुछ पौलुस और उन लोगों के साथ हुआ। वे तो केवल एक-दूसरे को उत्साहित करने के लिए पत्र लिख रहे थे—लेकिन परमेश्वर की योजना कहीं अधिक बड़ी थी।

हमने इन तीनों व्यक्तियों का उल्लेख इसलिए किया क्योंकि वे प्रसिद्ध हैं। परंतु बाइबल में एक और महत्वपूर्ण व्यक्ति है, जिसने पवित्रशास्त्र के निर्माण में एक निर्णायक भूमिका निभाई—हालाँकि वह तिमुथियुस जितना प्रसिद्ध नहीं है: वह है माननीय थियोफिलुस।

जैसे पौलुस ने तिमुथियुस को दो पत्र लिखे, वैसे ही लूका ने भी दो ग्रंथ लिखे—जिन्हें हम थियोफिलुस को संबोधित पहले और दूसरे पत्र के रूप में देख सकते हैं।

बहुत से लोग नहीं जानते कि लूका का सुसमाचार और प्रेरितों के काम मूल रूप से व्यक्तिगत पत्र थे, जो किसी एक व्यक्ति को संबोधित थे—थियोफिलुस को। वे सार्वजनिक रूप से या पूरी कलीसिया को संबोधित नहीं थे, बल्कि विशेष रूप से उसी के लिए लिखे गए थे। इस प्रकार हम कह सकते हैं: थियोफिलुस को पहला पत्र

हम माननीय थियोफिलुस से क्या सीख सकते हैं?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

(लूका) और थियोफिलुस को दूसरा पत्र (प्रेरितों के काम)।

लेकिन थियोफिलुस कौन था?

संक्षेप में, थियोफिलुस एक उच्च पदस्थ अधिकारी था, संभवतः एक रोमी और यहूदी नहीं। वह प्रभावशाली व्यक्ति था, जिसे यीशु और उसके प्रेरितों—विशेष रूप से पौलुस—की कहानी में गहरी रुचि थी। परंतु उसे यह समझ नहीं आ रहा था कि जो कुछ उसने सुना है, उसे वह किस रूप में स्वीकार करे। जब उसे यह जानकारी मिली, उस समय यीशु स्वर्ग में उठाया जा चुका था, पौलुस वृद्ध हो चला था, और प्रेरित सारे संसार में फैल चुके थे।

थियोफिलुस, एक समझदार और प्रतिष्ठित व्यक्ति होने के नाते, लूका के पास गया—जो पौलुस का निकट सहयोगी था—और उसने उससे अनुरोध किया कि वह यीशु और प्रेरितों के घटनाक्रमों की एक विश्वसनीय और अच्छी तरह से शोध की गई रिपोर्ट तैयार करे। थियोफिलुस यह जानना चाहता था कि उसने जो कुछ सुना है, वह वास्तव में सत्य है या नहीं।

हमें नहीं पता कि थियोफिलुस ने इस कार्य में लूका की कितनी सहायता की, पर हम यह जानते हैं कि वह पूरी तरह इस प्रयास के पीछे खड़ा था।

हम माननीय थियोफिलुस से क्या सीख सकते हैं?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

लूका, जो एक पढ़ा-लिखा व्यक्ति था (व्यवसाय से चिकित्सक) और मसीह का समर्पित अनुयायी था, उसने बड़ी लगन से यीशु के जीवन की एक क्रमबद्ध कथा तैयार की—उसके जन्म से लेकर स्वर्गारोहण तक। फिर उसने प्रेरितों के कार्यों के बारे में लिखा, विशेष रूप से पौलुस की मिशन यात्राओं और गैर-यहूदियों के बीच सुसमाचार के फैलाव को लेकर।

जब लूका ने यह सब लिख लिया, तो उसने वह थियोफिलुस को भेजा। यही दो ग्रंथ आज हमारे पास हैं—लूका का सुसमाचार और प्रेरितों के काम।

निःसंदेह थियोफिलुस इन पत्रों को पाकर बहुत प्रसन्न हुआ होगा। उसकी शंकाएं दूर हुईं और उसने उस स्पष्टता के लिए परमेश्वर की स्तुति की, जो उसे अब मिली थी।

आइए इन दोनों पुस्तकों की प्रस्तावनाओं पर एक दृष्टि डालते हैं:

लूका 1:1–4 (ERV-HI):
“कई लोगों ने उन घटनाओं का क्रमबद्ध वर्णन लिखने का प्रयास किया है जो हमारे बीच पूरी हुई हैं।
यह उन्होंने उन लोगों से मिली बातों के आधार पर किया,

हम माननीय थियोफिलुस से क्या सीख सकते हैं?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

जिन्होंने पहले पहल इन बातों को देखा था और जो वचन के सेवक बने।
सो मैंने भी यह विचार किया कि मैं इन सब बातों की पूरी छानबीन शुरू से करके, तुझे, महामान्य थियोफिलुस, एक क्रमबद्ध विवरण लिखूं।
जिससे तू उस शिक्षा की सच्चाई जान सके जिसमें तुझे सिखाया गया है।”

प्रेरितों के काम 1:1–3 (ERV-HI):
“हे थियोफिलुस, मैंने अपनी पहली पुस्तक में उन सब बातों का उल्लेख किया जो यीशु ने करना और सिखाना शुरू किया था
उस दिन तक जब वह स्वर्ग पर उठाया गया। उस दिन तक उसने उन प्रेरितों को, जिन्हें उसने चुना था, पवित्र आत्मा के
द्वारा आदेश दिए।
उसने अपने दुख झेलने के बाद बहुत से प्रमाणों के द्वारा उन्हें यह दिखाया कि वह जीवित है। वह चालीस दिनों तक उन्हें दिखाई देता रहा और परमेश्वर के राज्य के विषय में बातें
करता रहा।”

तो, हम थियोफिलुस से क्या सीख सकते हैं?

पहली बात यह है कि लूका और प्रेरितों के काम जैसी पुस्तकें

हम माननीय थियोफिलुस से क्या सीख सकते हैं?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 6

हमारे विश्वास की नींव हैं। ये शिक्षाओं और आत्मिक सच्चाइयों से परिपूर्ण हैं।

थियोफिलुस सिर्फ यीशु की कहानियाँ सुनकर संतुष्ट नहीं हुआ। वह सम्पूर्ण सत्य जानना चाहता था: यीशु का जन्म कैसे हुआ? किन परिस्थितियों में? उसका परिवार कौन था? उसने क्या उपदेश दिया और कितने समय तक? वह कैसे मरा, कैसे जी उठा और अब कहाँ है? शायद वह यह सब अपने लिए, लेकिन अपने बच्चों और परिवार के लिए भी जानना चाहता था।

थियोफिलुस, एक सच्चे मसीही शिष्य के समान, परमेश्वर की संपूर्ण प्रकट शिक्षाओं को जानने की गहरी चाह रखता था।

लूका 1:3 में लिखा है:
“…मैंने भी यह विचार किया कि मैं इन सब बातों की पूरी
छानबीन शुरू से करके, तुझे, महामान्य थियोफिलुस, एक
क्रमबद्ध विवरण लिखूं…”

यह हमें यह सिखाता है कि उद्धार की कहानी का स्पष्ट और सटीक विवरण कितना महत्वपूर्ण है—यही हमारे विश्वास की नींव है।

हम माननीय थियोफिलुस से क्या सीख सकते हैं?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 7

थियोफिलुस झूठी शिक्षाओं से भ्रमित नहीं होना चाहता था। उसने स्पष्ट और विश्वसनीय जानकारी की खोज की—और वह लूका के पास गया, जिस पर उसे भरोसा था।

लूका ने हर बात की गहराई से जांच की और क्रम से लिख दिया।

यह पवित्रशास्त्र की विश्वसनीयता को दर्शाता है। लूका ने केवल मौखिक परंपराओं को नहीं दोहराया, बल्कि हर तथ्य को जांचा और स्पष्ट रूप में प्रस्तुत किया। यह हमें बाइबल की त्रुटिहीनता के सिद्धांत की याद दिलाता है—कि मूल ग्रंथों में पवित्रशास्त्र हर बात में सत्य और विश्वासयोग्य है।

इसलिए लूका लिखता है:

लूका 1:4 (ERV-HI):
“जिससे तू उस शिक्षा की सच्चाई जान सके जिसमें तुझे सिखाया गया है।”

थियोफिलुस सिर्फ यीशु के बारे में ही नहीं जानना चाहता था—वह यह भी जानना चाहता था कि प्रेरितों ने क्या किया, उन्होंने सुसमाचार कैसे फैलाया, और विशेष रूप से पौलुस कौन था, उसे यीशु

हम माननीय थियोफिलुस से क्या सीख सकते हैं?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 8

से कैसे मुलाकात हुई, और उसकी यात्राओं में क्या-क्या हुआ। लूका ने यह सब विस्तार से लिखा।

जब हम आज प्रेरितों के काम पढ़ते हैं, तो पाते हैं कि विश्वास का मार्ग उतार-चढ़ावों से भरा होता है। उसमें कष्ट और परीक्षाएं होती हैं। यह मसीही जीवन का एक आत्मिक सिद्धांत है: परीक्षाओं में विश्वास परखा जाता है और वह और दृढ़ होता है।

रोमियों 5:3–4 (ERV-HI):
“यह ही नहीं, वरन हम तो क्लेशों में भी आनन्दित होते हैं, यह जानकर कि क्लेश से धीरज,
और धीरज से खरा निकलना, और खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती है।”

याकूब 1:2–4 (ERV-HI):
“हे मेरे भाइयो और बहनो, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो, तो इसको पूरे आनन्द की बात समझो।
क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है।
और धीरज को पूरा काम करने दो, कि तुम सिद्ध और संपूर्ण बनो और तुम्हें किसी बात की घटी न रहे।”

हम माननीय थियोफिलुस से क्या सीख सकते हैं?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 9

थियोफिलुस ने जब सच्चाई की खोज की और उसे पूरी निष्ठा से अपनाया, तो वह हमारे लिए भी आशीष का माध्यम बना।

हमें भी थियोफिलुस के समान बनना चाहिए। जब हम परमेश्वर के वचन को पूरी लगन और निष्ठा से खोजते हैं, तो वह न केवल हमें आशीष देता है, बल्कि दूसरों और आने वाली पीढ़ियों को भी।

2 तिमुथियुस 2:15 (ERV-HI):
“तू इस बात का प्रयत्न कर कि परमेश्वर के सामने तेरा ऐसा
प्रमाण हो कि तू निर्दोष काम करनेवाला ठहरे और जो सत्य का
वचन है उसे ठीक रीति से काम में लाए।”

हो सकता है, आज तुम कुछ छोटा सा कर रहे हो—जैसे कुछ लिखना या अपने बच्चों को सिखाना। यह तुच्छ लग सकता है। पर तुम नहीं जानते कि परमेश्वर भविष्य में इसका कितना बड़ा उपयोग करेगा। शायद थियोफिलुस को लगा हो कि ये पत्र केवल उसके और उसके परिवार के लिए हैं—पर परमेश्वर की योजना कहीं आगे तक फैली हुई थी: करोड़ों लोगों को इन पत्रों से आशीष मिली।

थियोफिलुस के लिए क्या प्रतिफल तैयार है? और वह तो यहूदी भी नहीं था!

हम माननीय थियोफिलुस से क्या सीख सकते हैं?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 10

एक दिन वह प्रभु के सामने खड़ा होगा और देखेगा कि उसकी सत्य की खोज ने न केवल उसके परिवार, बल्कि अनगिनत लोगों की आत्मा के लिए कितना बड़ा कार्य किया। आज वह कब्र में विश्राम कर रहा है—लेकिन पुनरुत्थान के दिन वह अपनी मेहनत का अद्भुत प्रतिफल देखेगा। और शायद यदि उसे पहले से यह पता होता, तो वह और अधिक ज्ञान की खोज करता—ताकि और भी बड़ी महिमा पाए।

उसकी निष्ठा के कारण ही हमारे पास आज लूका का सुसमाचार और प्रेरितों के काम हैं।

मत्ती 8:11 (ERV-HI):
“मैं तुमसे कहता हूँ कि बहुत लोग पूरब और पश्चिम से आएंगे और स्वर्ग के राज्य में इब्राहीम, इसहाक और याकूब के साथ भोजन करेंगे।”

प्रभु हमें भी ऐसा अनुग्रह दे कि हम आज कुछ ऐसा करें जो आने वाली पीढ़ियों के लिए आशीष का कारण बने।

मारानाथा!

Share on:

हम माननीय थियोफिलुस से क्या सीख सकते हैं?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 11

WhatsApp